केशव प्रसाद वर्मा

जन्म तिथि : 26-02-1938

निवास : मोरियावाँ, बिक्रम, पटना

सिच्छा : बी० ए०

परकासित पुस्तक :

1. सोना के सीता (मगही एकांकी संकलन)
2. कन्हइया के दरद (मगही नाटक)

सम्पादन :

मगही पत्रिका 'पाटलि'

प्रस्तुत एकांकी नाटक 'प्रियदर्शी अशोक' में ऊ समय के ऐतिहासिक बरनन कइल गेल हे। कलिंग-विजय के बाद समराट अशोक के मानसिक स्थिति देखावइत उनकर संका आउ चिन्ता के समाधान कैल गेल हे। ई एकांकी के माध्यम से अशोक के समय गौतम बुद्ध के विचार के प्रभाव देखाना नाटककार के उद्देस्य हे।

प्रियदर्शी अशोक

[1]

पाटलिपुत्र, मगध के राजधानी, राजधानी के महल के एकान्त कोठरी, कोठरी के एक किनारे एगो सुघड़ पलंग, पलंग पर समराट अशोक सांत-चित बइठल हथ। आधा रात के समय, लगातार जागल रहे के कारन अशोक के दुन्नो आँख पूरा सूज के लाल हो गेल हे। कोठरी के दीवार पर एगो खून से रँगायल लाल तलवार झूल रहल हे। अशोक टकटकी लगा के तलवार के देख रहलन हे, न जानी कउन बात इयाद आवइते ऊ बोले लगलन।]

अशोक : कइसन हे महासक्ति ई भुजंगिनी के ! आज ई हम्मर कोठरी के दीवार पर केतना आनन्द से झूल रहल हे ! एकरा में अपार सक्ति हे ! कलिंग मिल गेल न धूल में ? अशोक के माथा पर मौर्य-मुकुट, सोना के मुकुट, ई सहल जा रहल हे ! ओह, ई तो रक्त से सनायल हे, सिर फटल जा रहल हे। हमरा मुकुट न चाही, कलिंग विजय भी न चाही, देखऽ कलिंग के भूमि ! ई तो खूने में नेहायल हे, एकर कन-कन खून से पट गेल हे, कलिंग राज हमरा कोस रहल हे, अशोक राछस हे, निर्दयी, हत्यारा, अप्पन भाई के हत्यारा, चण्डाशोक ! ऊ अप्पन पिता पर चढ़ाई कयलक ! कलिंग के सांति पर हाथ उठयलक। (कुछ इयाद करके) दुर्गन्ध ! मुर्दा के गन्ध ! अरे, कलिंग के भूमि से मुर्दा के गन्ध ! ओह ! रुलाई, चितकार कहाँ से आ रहल हे। (सोंच के) ऊ सुन्दरी बिलख रहल हे ! ओकर माँग के सिन्दूर दोहरावलो न गेल आउ ओकर सोहाग उजड़ गेल। ओह ! अइसन जीउ-हत्या कबहियों न होयल होयत। (बिछावन से उठ के दीवार से टंगल तलवार के अप्पन हाथ में लेके) कइसन सक्तिसाली हे ई खडग ! एकरा में केतना चमक हे। बिजुली नियर चमचम ! ओह ! केतना खून में डुबइली, बाकि एकरा पर खून के रंग न चढ़ल। (अप्पन छाती के तरफ इसारा करके) अब हम अप्पन छाती में डुबा के तोरा देखम, खून के सागर हे एकरा में (खड्ग से अप्पन हत्या करे के कोसिस करेला चाहऽ हथ कि एगो बौद्ध-भिक्षु प्रणयगुप्त के परवेस)

प्रणयगुप्त : महाराज ! ई का ? पलायन, जीवन से पलायन !

अशोक : के ? (प्रणयगुप्त के तरफ देख के) तूँ कइसे आ गेलऽ प्रणयगुप्त ? बौद्ध-भिक्षु ! हम डुबा लेम ई भुजंगिनी के अप्पन छाती में। कलिंग के ई प्रतिसोध !

प्रणय : कलिंग के प्रतिसोध ई न हे कलिंग-विजेता ! ई तो घोर पराजय हे, तोर हार ! विजय चाहे ओला के अप्पन पराजय में आनन्द कहाँ ?

अशोक : हम विजयी न ही बौद्ध-भिक्षु ! हम्मर अन्दर में पस्चात्ताप के भट्ठी जल रहल हे। ओकरा में केतना ज्वाला हे !

प्रणय : विजय के अन्त तो एही पस्चात्ताप के ज्वाला हे, मगध समराट !

अशोक : तब का करीं, भन्ते ?

प्रणय : पस्चात्ताप छोड़ देल जाय महाराज ! विजय के इच्छा के पुरती अप्पन मन पर विजय पावे ओला साधन जुटावे में करीं। अपने कलिंग-विजयी न, विस्व-विजयी बन जायम।

अशोक : बाकि कलिंग के लड़ाई में अनगिनती मनुस के मार-काट से हम्मर अतमा पूरा दुखी हे। मनुस तो ईस्वर के सिरिस्टी हे। मनुस-हत्या सिरिस्टी-करता पर आघात हे, ईस्वर पर अविस्वास हे बौद्ध-भिक्षु !

प्रणय : हँ समराट ! जे नित न हे ओकरा पर बिसवास न कैल जा सकऽ हे। मानव, अतमा, ईस्वर, कउनो नित न हथ।

अशोक : ई कइसे ?

प्रणय : अपने कलिंग के लड़ाई में अनेक जीउ के हनन कइली, सिरिस्टी के बिनास कइली, ईस्वर पर अबिस्वास भेल, ई लेल जीउ, सिरिस्टी, ईस्वर, कउनो नित न हे।

अशोक : बात समझ में न आ रहल हे भिक्षुवर !

प्रणय : ई तो सब कोई जानऽ हे कि जे नित हे, ओकर हनन कइसन ? नित के विनास कइसन ? नित पर अबिस्वासो न कैल जा सकऽ हे ।

अशोक : ई तो ठीक हे।

प्रणय : सोच के देखीं, जीउ उत्पन्न होहे, सिरिस्टी के सिरजन होहे, ईस्वर पर बिस्वास बढ़ऽ हे, बाकि उत्पन्न होय ओला सब जीउ के बिनासो होहे।

अशोक : एही से मनुस, अतमा, ईस्वर, सब अनित हथ ?

प्रणय : हँऽ, एही न तथागत के अनित्यवाद हे !

अशोक : तब ई संसार ?

प्रणय : घटना के प्रवाह हे ! आउ घटना तो काज-कारन के मेल हे। जीउ के नास आउ सिरजन केवल काज हे, जेकर कोई कारन जरूर हे।

अशोक : फिर बात समझ में न आवइत हे भिक्षुवर !

प्रणय : त देखीं; कलिंग पर अपने के चढ़ाई, ओकर हार आउ अपने के विजय, सब एगो काज भर हे जेकरा पीछे अपने के विजय-इच्छा, सेना के सक्ति आउ कलिंग के अयोग्यता कारन हे। ई लेल कलिंग-विजय में मनुस के नास कउनो ईस्वर पर अबिसवास न हे। खाली काज आउ कारन के मेल हे, घटना के समूह।

अशोक : तब भन्ते, ई संसार ?

प्रणय : ई संसार तो सुन्दर आउ असुन्दर तट से घिरल एगो अइसन नदी हे जेकरा में स्वच्छ आउ अस्वच्छ, सीतल आउ गरम जल के महाप्रवाह हे जे अनित सागर में परवाहित होइत रहऽ हे !

अशोक : तब तथागत के एही अनित्यवाद भेल ?

प्रणय : हँऽ मगधपति !

अशोक : बाकि अनित तो परिवर्तन चाहऽ हे।

प्रणय : हँऽ, बुद्ध भी परिवर्तन चाहऽ हलन।

अशोक : आउ जुध भी तो परिवर्तन हे।

प्रणय : बाकि सिव न हे जुध। एकरा से कल्यान न होयत।

अशोक : तब सही कउन मार्ग हे?

प्रणय : मध्यम मार्ग, बीच के मार्ग। ई मार्ग हमेसा सिवं होवऽ हे। सुन्दरो कम न होवे।

अशोक : ई कइसे ?

प्रणय : परवत के छाती फाड़ के जब निरझर नदी के रूप में आगे बढ़ऽ हे, तब ओकर पहिला मार्ग सुरू हो हे। कइसन जुध से भरल रहऽ हे ओकर जीवन ! विसाल चट्टान पर गिर के ओकरा चूर-चूर कर देहे, उछलइत-कुदइत भागल चलऽ हे, जाठ नियर खड़ा तरुवन के गिरा देहे। ऊ समय ओकरा में सुन्दरता रहऽ हे, ओकर कल-नाद में मोहन-मंतर होहे। बाकि ओकर उछलइत जल से एगो कन केकरो पियास मेटा सकऽ हे ? अपने में कउनो कस-बल हे जे ओकर जल के एक्को बूँद अप्पन अंजुरी में ले लेम ?

अशोक : बाकि ओकर सक्ति कम सराहे लायक न हे !

प्रणय : बाकि ओकरा से कल्यान कहाँ हे? ऊ सरिता जब अप्पन मध्यम-मार्ग में आ जाहे, तब सांति पा लेहे ! अपना पर रोक लगा लेहे ! ऊ समय कोई जुध न करऽ हे। ओकरा में हमनी डुबकीओ लगा लेही। हमनी के पियास मेटा देहे। केतना कल्यान करऽ हे !

अशोक : आउ अन्तिम मार्ग भन्ते ?

प्रणय : ऊ तो मिरतु हे। कउनो गति न, कउनो परिवर्त्तन न !

अशोक : तब तो मध्यम-मार्ग ही अच्छा हे ।

प्रणय : विकास के मार्ग क्रान्ति से भरल रहऽ हे। ओकर बाद के मार्ग कल्यानमय आउ अन्तिम मार्ग सांतिपूर्ण हे मगधपति ! अपने के विकास मार्ग के फल हे हत्या, मार-काट, नरसंहार ! मध्यम मार्ग ग्रहण करीं। एकरा से अपने के राज में सुव्यवस्था बढ़त आउ राजसत्ता लोकसत्ता बन जायत।

अशोक : तब एकरा ला नीति कइसन होयत ?

प्रणय : पंचसील, तथागत के पंचसील !

अशोक : पंचसील !

प्रणय : हँऽ, पड़ोसी राज के स्थिरता आउ पूर्णता पर बिस्वास के साथे अप्पन आपसी सरोकार रखीं, कउनो राज पर चढ़ाई न करीं, कउनो राजा के भीतरी विचार में कउनो रोक-टोक न करीं, सबके साथे समानता आउ आपसी प्रेम-भाव रखीं आउ सांतिपूर्ण सह-अस्तित्व में बिस्वासो करइत रहीं, एही तथागत के पंचसील हे महाराज !

अशोक : हम एकरा अप्पन मार्ग-दर्सन स्वीकार कर लेली भिक्षुवर !

प्रणय : तब तो अपने के भीतरी देवता जाग गेलन, पस्चात्ताप के अगनी भी राख हो गेल। अब अपने चण्डाशोक न, प्रियदर्शी अशोक कहल जायम।

अशोक : तब जाईं भिक्षुवर ! भिक्षु संघ के तीसरा संगति के आयोजन मगध में करीं। राज-कोस के अधिक से अधिक अंस बौद्ध-सेवा में खर्च

होयत। बौद्ध-भिक्षु विदेस में भेजल जयतन। बौद्ध-धरम के परचार होयत। संसार के कन-कन में बौद्ध-धरम परम संगीत बनके समा जायत। मगधपति अशोक सुधा बरसावत, अमरित, जेकरा से धरती सुधामयी बन जायत। भोर के किरन में बौद्ध के अमर संगीत होयत, पंछी के कलरव में एही संगीत गूंजत, निरझरनी के कल-कल निनादो से एही संगीत फूटत, अमर संगीत, कल्यानकारी संगीत, सत्यं सिवं सुन्दरं !

(पट-परिवर्त्तन)

[2]

[नगर से दूर प्रणयगुप्त के आश्रम अकेले प्रणयगुप्त धेयान में लीन हथ। कलिंग के राजकुमार देवेन्द्र के परवेस]

देवेन्द्र : आचार्य !

प्रणय : (चुप)

देवेन्द्र : गुरुदेव !

प्रणय : के ? देवेन्द्र ! राजकुमार देवेन्द्र !

देवेन्द्र : हँऽ भन्ते !

प्रणय : तूँ तो अशोक के कैदखाना में कैद हलऽ ?

देवेन्द्र : हँऽ आचार्य !

प्रणय : तऽ अशोक तोरा छोड़ देलन ?

देवेन्द्र : शेर के सिकारी जाल में फँसल शेर के छोड़ देहे कहीं ?

प्रणय : तऽ तूँ अप्पन मुक्ति ला अशोक से दया के भीख माँगलऽ ?

देवेन्द्र : कलिंग के कुमार देवेन्द्र एतना बलहीन हो गेल कि अशोक से दया के भीख माँगत !

प्रणय : तऽ कइसे अयलऽ ?

देवेन्द्र : मगध महारानी तिस्यरक्षिता के भूल आउ मगध सेनापति के वीरता के कारन।

प्रणय : साफ-साफ बतावऽ कुमार !

देवेन्द्र : अशोक के नइकी रानी तिस्यरक्षिता हमरा पर मुग्ध होके हमरा से प्रेम-संबंध के प्रार्थना कयलन। ओकरा हम अप्पन सौर्य के प्रति चुनौती समझ के महारानी के प्रार्थना ठुकरा देली।

प्रणय : धन्य हऽ देवेन्द्र ! कलिंग वंस में अइसने राजकुमार होवऽ हथ।

देवेन्द्र : बाकि गुरुदेव ! ओही समय मगध सेनापति आ गेलन आउ महारानी उनका हम्मर गर्दन काटे के आदेस दे देलन।

प्रणय : तब का होयल कुमार ?

देवेन्द्र : होयत का गुरुदेव ! सच तो जीतऽ हे न ! हम अप्पन सच सेनापति के आगे रख देली। सेनापति महारानी के प्रस्ताव से दुखी हो गेलन आउ जेल के दरवाजा खोल के हमरा निकाल देलन !

प्रणय : तब ?

देवेन्द्र : हम मुक्त ही। हम्मर रोम-रोम प्रतिसोध के आग में जल रहल हे।

प्रणय : बाकि प्रतिसोध तो जुध के समर्थन हे।

देवेन्द्र : जेकर रग में एक्को बूँद गरम खून रहत ऊ जुध चाहत, प्रतिसोध चाहत। कउनो मूर्ख महानाग के फन पर चोट मारत आउ महानाग ओकरा नास न करत ?

प्रणय : बाकि ऊ विसाल पेड़ तोरा पर टंगारी न चलावऽ हे जेकर डाल के तूँ काट दे हऽ। ऊ तो तोरा अप्पन फल आउ छाया देहे जब तूँ ओकरा पास जा हऽ।

देवेन्द्र : बाकि अशोक तो अइसन पेड़ हे जेकर डाल-पात ही विसैला हे। ओकर छाया में विस हे, जलन हे, भयंकर जलन।

अचानक महाराज अशोक के आगमन ।

अशोक : कुमार देवेन्द्र ! वीणा के तार के एतना मत अँइठऽ कि टूट जाय। अधिक अइँठन पाके केतना वीणा तार-तार हो गेल।

प्रणय : महाराज अशोक ?

अशोक : हँऽ, मगध समराट अशोक, जेकर वीणा अधिक अइँठन पाके टूट गेल हे।

प्रणय : भगवान बुद्ध तो कहलन हे कि वीणा से निमन राग निकाले ला वीणा के तार के सम पर रक्खऽ !

देवेन्द्र : जउन भंभावात फलल-फूलल वाटिका के उजाड़ देहे, ओकरा सम पर आवे के बात कबहिओं न सोचल जा सकऽ हे। ऊ तो सरबनासे करत। मगधपति चण्डाशोक हथ भंभावात, भयंकर, ई तो विनासे करतन !

अशोक : न-न देवेन्द्र ! भगवान बुद्ध के उपदेस अइसन गिरिराज हे जेकरा पास पहुँच के भयंकर से भयंकर भंभावात थम जाहे। ऊ सम पर आ के सीतल-मंद-सुगन्ध पवन बन जाहे।

प्रणय : हँऽ राजकुमार ! समराट अशोक बुद्धत्व प्राप्त कर लेलन हे ! ऊ अब सान्त पवन नियर विचरतन, भोर के किरींग नियर सुतल लोग के जगयतन। बरसा के मेघ नियर अमरित बरसयतन।

देवेन्द्र : तब तो हम खो के भी पा गेली। हार के भी जीत गेली।

अशोक : हार के जीत गेली !

देवेन्द्र : अचरज के बात न हे समराट ! अपने कलिंग पर चढ़ाई कइली। कलिंग-राज बौद्ध-धरम मानऽ हलन आउ अपने सनातन धरम। दुन्नो धरम के बीच कइसन लड़ाई भेल ! खून के नदी बहल, कलिंग-राज मारल गेलन। कलिंग तो बरबाद हो गेल, बाकि अपनहीं कहीं, का सनातन धरम जीत गेल ?

अशोक : न, हम बौद्ध-धरम मान लेली। बौद्ध-धरम जीत गेल, हम हार गेली। कलिंग जीत गेल। तूँ कलिंग के राजकुमार हऽ, तोरा हम अभिसेक करम, कलिंग के सिंहासन पर बइठायम।

प्रणय : कुमार ! कलिंग तोरे हे, कलिंग के तूँ अधिकारी हऽ। अब प्रतिसोध के भावना छोड़ दऽ ! देखऽ, समराट के हाथ में राजमुकुट हे, तूँ झुक जा ! धरातल अप्पन बाँह फैला के अकास से महामिलन करे ला तइयार हे !

[अशोक अप्पन हाथ उठा के देवेन्द्र के मुकुट पहनावेला चाहित हथ । देवेन्द्र के माथा झुक जाहे। अशोक मुकुट पहना देलन ।

नेपथ्य में अवाज होइत हे—भगवान बुद्ध के जय ! प्रियदर्शी अशोक के जय !]

[पट-परिवर्त्तन]

[3]

[अशोक के राजमहल । महल के पास फैलल मैदान । एही मैदान में अशोक बौद्ध-भिक्षु-संघ के तिसरका संगति के आयोजन कइलन हे। चारो दिसा भेद के संख आउ भेरी के अवाज लगातार हो रहल हे अवाज सुनके चारो तरफ से जन-समूह उमड़ल आ रहल हे। जन-समूह के कोलाहल के चीर के आवइत अवाज सुनाई पड़इत हे–भगवान बुद्ध के जय ! देवानाम् प्रियदर्शी अशोक के जय !

जन-समूह के आगे मंच पर समराट अशोक आउ बौद्ध-आचार्य प्रणयगुप्त दिखाई देइत हथ। प्रणयगुप्त जन-समूह के सम्बोधित करके कहे लगलन]

प्रणय : कलिंग-विजय से समराट अशोक के दिल में असान्ति फैलल हे, बाकि उनका सांति के सागर भगवान बुद्ध के उपदेस प्राप्त हो गेल हे। अब ऊ सांति प्राप्त करेला देस-बिदेस में बौद्ध भिक्षु भेजतन ! एही उपदेस देवेला आज बौद्ध-भिक्षु-संघ के तिसरका संगति के आयोजन करल गेल हे।

एगो अवाज : देवानाम प्रियदर्शी अशोक के.....

जन-समूह : जय !

प्रणय : मगध के नागरिक लोग ! सान्त होवऽ, सान्त होवऽ ! देखऽ, तोरा लोग के आगे महान भिक्षु आउ भिक्षुनी के दल आ रहलन हे। ई दल सान्ति-विजय करेला विदेस में जयतक। सबसे आगे के हे ? जन-समूह तो पहचान गेल होयतन ! ई हथ कलिंग के राजकुमार देवेन्द्र ! इनका पीछे मगध के सामन्त आउ परमुख नागरिक हथ ! सब कोई बौद्ध-भिक्षु बन गेलन हे।

[सब भिक्षु आउ भिक्षुनी के पोसाक एक्के तरह के हे....पीला वस्त्र के बनल चोंगा, जेकरा अन्दर सब सरीर ढँकल....हाथ में

काला रंग के तुम्बी.....भिक्षा-पात्र, दूसर हाथ में बौद्ध-ग्रंथ। भिक्षु के दल जन-समूह के आगे आके रुक जाहे। राजकुमार देवेन्द्र के अवाज सुनाई पड़ऽ हे।]

देवेन्द्र : बुद्धं शरणं गच्छामि !

भिक्षु के दल : बुद्धं शरणं गच्छामि !

देवेन्द्र : धम्मं शरणं गच्छामि !

भिक्षु के दल : धम्मं शरणं गच्छामि !

देवेन्द्र : संघं शरणं गच्छामि !

भिक्षु के दल : संघं शरणं गच्छामि !

[धीरे-धीरे परदा गिर रहल हे]

अभ्यास-प्रश्न

मौखिक :

1. (क) एकांकी के मुख्य तीन गो तत्व बतलावऽ ।

   (ख) पट-परिवर्तन केकरा कहल जाहे ? पट-परिवर्तन के नाटक में का उपयोगिता हे ?

   (ग) तीसरा दिरिस में अशोक के राजमहल के आकर्सण बतावऽ।

   (घ) जे छूट गेल हे ओकरा पूरा करऽ :

   (i) बुद्धं शरणं गच्छामि !

   (ii) .....

   (iii) .....

   (ङ) कलिंग विजय के बावजूद समराट अशोक के दिल में असान्ति काहे फैलल हे ? समझावऽ ।

लिखित :

1. 'प्रियदर्शी अशोक' के लेखक के परिचय पाँच वाक्य में देवल जाय।
2. 'सोहाग उजड़ गेल' कहे के तात्पर्य बतावऽ।

3. प्रणयगुप्त कउन हथ ?

4. 'विजय' आउ 'पराजय' में संबंध बतावल जाय।

5. 'मनुस तो ईस्वर के सिरिस्टी हे' के का मतलब हे?

6. तथागत के 'अनित्यवाद' पर पाँच वाक्य लिखऽ।

7. गौतम बुद्ध के 'मध्यम मार्ग' पर पाँच वाक्य लिखऽ।

8. 'मिरतु' कउन मार्ग हे ?

9. 'पंचसील' के पाँचो सील बतावऽ।

10. 'चण्डाशोक' आउ 'प्रियदर्शी अशोक' में का फरक हे ?

11. 'खून से रंगायल तलवार' के का मतलब हे ?

12. सप्रसंग व्याख्या कैल जाय :—

(क) शेर के सिकारी जाल में फँसल शेर के छोड़ देहे कहीं ?

(ख) वीणा के तार के एतना मत अँइठऽ कि टूट जाय।

(ग) ई संसार तो सुन्दर आउ असुन्दर तट से घिरल एगो अइसन नदी हे जेकरा में स्वच्छ आउ अस्वच्छ, सीतल आउ गरम जल के महाप्रवाह हे, जे अनित सागर में परवाहित होइत रहऽ हे।

13. 'एकांकी नाटक' केकरा कहल जाहे ?

भासा-अध्ययन

1. पाठ में 'आग में जलना' एगो मुहावरा आयल हे। एकरा अलावे पाँच गो मुहावरा चुनके ओकरा से वाक्य बनावऽ।

2. पाठ में आयल तत्सम सब्द चुन के बतावऽ।

3. समास बतावऽ :
मार-काट, नरसंहार, अशोक, पंचसील, देवेन्द्र ।

योग्यता-विस्तार :

1. विद्यालय के वार्सिक उत्सव में ई एकांकी खेलऽ आउ अभिनय के बाद एकांकी के त्रुटि आउ विसेसता बतावऽ।

2. 'पर्यावरण परदूसन' पर एगो एकांकी लिखऽ ।

3. ऐतिहासिक आउ समाजिक नाटक में से तोरा कउन अच्छा लगऽ हे, ओकर कारन बतावऽ ।

4. नाटक आउ एकांकी में मुख्य अन्तर लिख के शिक्षक के देखावऽ।

सब्दार्थ :

खून से पट गेल	—	खून के धारा बह गेल
बिलख रहल	—	रो रहल
पलायन	—	भाग जाना
भुजंगिनी	—	नागिन, तलवार
पस्चात्ताप के भट्ठी	—	पछतावा के गरमी (आग)
विस्व-विजयी	—	संसार के जीतेवला
जीउ के हनन	—	जीउ-हत्या
काज-कारन	—	काम आउ ओकर कारन
उछलइत-कुदइत	—	ऊपर-नीचे होइत
कल-नाद	—	कलकल ध्वनि
कस-बल	—	ताकत
सौर्य	—	वीरता
प्रतिसोध	—	बदला
टंगारी	—	पेड़ काटे के औजार
झंझावात	—	अंधड़-तूफान
भोर के किरींग	—	सुबह के किरन

•••